

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Thursday, 05 July 2018 03:18

: 000000 0000000 00 00 00000000 00 00000 00 00000 0000000 : 000000 00 00000000000
000000000 00000 000000 00 , 000000000 000000 0000 : 00000000 0000000000 0000 00000 00
000000 0 000000 , 00 00000 0000 00 000000 : 0000000 00 00 , 00000 0000000000 0000 00000
00 000000000 0000000 00 0000000 00000000 : 0000000-000000-00 :

00000 00000000 000000000000

00 000000000 : (0000000 00 00000)जुल सर, क्या हम लकियां इसलकि रकिूट हो रही है? क्या यह संस्थान की प्रमाणकिता पर धब्बा नहीं लगाता?

मेरे सीनयिर गजेंद्र जी तो संपादकजी के व्यवहार के कारण अवसाद में चले गये थे, जिसकि उनहूँ इलाज कराना पडिा बाद में अचछा अवसर मलिने पर इस्तीफा दे गये यहां भी वनिीत जी ने खेल किया, इस्तीफेके बात पूरी टीम से छुपाकर रखी, आरबी लाल जी , अनूप जी , शशांकजी और अशोकवैश्य जी से प्रचारकि कराया कि गजेंद्र डरकर भाग गये , बनिा सूचना दयिे! उनहूँ भगोये। तककह गया! कबार गजेंद्र जी से हो रहे बरताव पर मैंने अपनी बात रख दी थी तो मेरे पीछे मुझे उनके 'सहेली' बता दयिा गयाये ये बहुत ही हलके बातें है पर शायद वे इसके भी तरके से ढंकसक्ते हैये

बहुत ही योग्य व्यक्ति चीफ सब नीरज श्रीवास्तव जी के भी जूनियरस के सामने बहुत प्रतापकि कयिा गया, वो झुके नहीं तो साइड लाइन कर दयिे गये कगये मजबूत रखने के वो दो डाककेहेड थे पर वास्तवकिता में उनसे उस टीम में जूनयिर के साथ बैठाकर काम लयिा गया, जिसि पूरी टीम के वह दो साल तक वह क्लसटर हेड रहेये

000000000000 00 000000 000000 00 000000 00 0000 00000000 00000 00 000000 000000 :-

00000000 000000000000

इंटरन से ट्रेनी तकक मेरा सफर बहुत आदर्श और सीख भरा रहाये पत्रकरकिता जैसे क्षेत्र में केई भी कजुनून के कारण आता है, वह पनपता तब ही है जब उसके जोश में पत्रकरकिता के सदिधांत और व्यवहारकि हालात बताते हुये तपाया जाये, उससे खबरों पर बात के जाये उसे समझने, लकखक फिर उठने क समय दयिा जाये दो साल ट्रेनी रहने के दौरान मुझे मॉड्यूल के मुताबकिहर चरण में हर बात सखिाई गयिी मैं खुद के लके मानती हूँ इस माहौल के लकि

उदय सर आपके शायद ही याद हो पर मैंने आपके बताया था कि मेरे लकि दो साल कतिने महत्वपूर्ण रहे ये इंटरव्यू के दौरान मुझे प्रेरकि करने के आपने अपने शुरुआती दौर के अनुभव बताकर मुझसे ऐसे ही मेहनत करने के कहाये आप बोले कि मुझमें आपके भवषिय क संपादकदखि रहा हैये कसिी भी फ्रेशर के

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Thursday, 05 July 2018 03:18

तरह यह सुनना और वह इंटरव्यू मेरे जीवन के लिए □ अस बन गया □ पर अगर संपादक वनीत सक्सेना जैसे होते हैं तो मैं कभी नहीं चाहूँगी कि मैं यह बनूँ □

जुयाल सर और उस समय के सभी वरिष्ठ साथियों ने जो माहौल दिया, उसके लिए मैं खुद को लकी मानती हूँ □ पर सर्वश्रेष्ठ लकी नहीं रहा, करियर के शुरुआती दौर में उसे नरिशा होकर इस्तीफा देकर जाना पड़ा □ उसकी ट्रेनिंग में कोई मॉड्यूल का पालन नहीं हुआ, वो मेहनती था, जल्दी समझ लेता था तो उसे जोत दिया गया □ उसे प्रेशर हैंडल करने गरिने और संभलने का मौक़ा ही नहीं मिला □ इस बीच उसने उदय सर आपके कॉल और लिखित में हालात भी बताए □ रश्मा जी के अचानक टर्मिनेट किये जाने और ऑफिस की मुर्दा चुप्पी से वह बहुत टूट गया □ उसे शशांक वर्मा ने बाक्यदा नक्कलवा देने की धमकी दी □ वो किस हाल में पहुंच गया था यह समझने के लिए इतना ही काफी है कि उसने अपने □ गूजिट इंटरव्यू में लिखा कि अगर कुछ दिन और यहां काम किया तो उसकी मौत हो जायेगी! मुझे नहीं पता □ चआर के यह कतिना गंभीर मामला लगा हो? पर ट्रेनी बैच में मेरा जूनियर होने के नाते मेरे लिए यह बेहद नरिशाजनक था □ मैं समझती हूँ कि अगर किसी ट्रेनी के इतना सहकर जाना पड़े तो यह किसी भी संस्थान के फेल होने की स्थिति है □

□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ :-

□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□

रश्मा जी के साथ क्या हुआ और क्यों हुआ , इसके असलयित से सब वाकफ़ है □ मैं सरिफ़ इतना समझना चाहती हूँ कि क्या संस्थान में व्यक्तिगत हति साधना इतना आसान है?

वनीत सक्सेना ने दो लोगों के चमचा बना दिया, अनूप शर्मा और शशांक वर्मा □ दोनों कभी ऐसे नहीं थे, यह मेरा नहीं सबक अनुभव है □ ऐसा लगता है कोई गलाकट प्रतियोगिता चल रही है, दोनों जानते हैं कि दूसरों के नहीं काटा तो खुद मारे जायेंगे □ वनीत सक्सेना जब कभी बरेली से जायेंगे तो इस दोनों के कोई स्वीकार नहीं कर पायेगा □ खुद के अमर उजाला में ह्यूमन रिसोर्स क्लीनर की भूमिका में मानने वाले वनीत सक्सेना फर्म् से बताते हैं कि उनके आने पर छटनी होती है □ वह हर टीम वर्क का क्रेडिट खुद लेते हैं, कहते हैं कि सरिफ़ कदो स्ट्रगिर से पूरा अखबार निकल सकते हैं, उन्हें अमर उजाला की पद व्यवस्था में विश्वास नहीं □ गाँधी से □ रूरी पहचि नकिल ली जायें तो क्या गाँधी चल सकती है? क्या नो □ डा कार्यालय का वर्कक्लचर भी यही है, क्या वहां भी अवकाश के जगह गालियां मलिली है,

लक़ कियों के रात के दो-दो बजे तक घर अपने रसिक पर जाना होता है, लक़ कियों के बाथरूम जाने के टाइम तक पर नक़ र रखी जाती है??? मुझे पता है ऐसा नहीं है पर फिर छोटे शहरों में मनमानी कियों, यह जानना चाहूँगी □ जो भी लोग वहां काम कर रहे हैं सब सरिफ़ अपनी-अपनी मजबूरी में □ मैं भी मजबूर थी अपने कमिटमेंट से कि जिस संस्थान ने मुझे □ निदगी दी उसे किसी के व्यवहार के कारण भर से नहीं छोड़ूँगी पर बाद में जो हुआ वो अस्वीकार्य था □

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Thursday, 05 July 2018 03:18

000000 0000 00 00000-00000 00000 0000 00000000 00 00000000 0000,0000000 00 0000 00 0000 00 00
00000000-00000000000000 0000 00 00 00000000-00000000 000000 00,00 0000 0000 0000000 00 0000000 0000
000000 00000 0000000000000 0000 00 0000000 000000000 00 0000 00 00000 0000,00 00000000000 00
00000000 0000 0000000 00000 00000 00 000000 0000 0000000000000 00 00000000 00 00000 00000 00000 0000
0000,00000 0000000 00 0000 00 0000000 00000000 00000 00 0000000 00 00000 0000 0000 :-

[00000 0000,00000 0000](#)

00 00 00 0000000 000000000 00 0000000000,00000000 00000 0000000 00 0000000,00 0000 00000 0000000 00
00000000000000 00000 00000 00 0000000 000000000 00 00000000 00 000000000 00000 0000 00 00000 0000
000000000000 00000 00 0000 0000,000000000 0000 00000 0000 00 0000000 00 00000 0000 00000 00000 0000 00
00000 0000 00 00000 00 00000 0000000000 0000 00000 00 00000 000000000 0000000 00 0000 0000000 00000000
00000 00 0000000 000000000 :-

[000000-000000 00 0000 0000000 00 000000 00 000000 0000 0000 00000000](#)